9

रेडियो की विशेषताएँ

आपको संजय की कहानी तो याद होगी। उन्होंने धृतराष्ट्र को महाभारत के युद्ध का वर्णन सुनाया था क्योंकि धृतराष्ट्र देख नहीं सकते थे। संजय अपनी दिव्यदृष्टि से युद्ध को बिना रणभूमि में गये देख सकते थे। आप संजय को पहले रेडियो प्रसारक के रूप में मान सकते हैं।

मान लिया जाय कि आप गणतंत्र दिवस 26 जनवरी के दिन सुदूर हिमालय में हैं। आपके पास एक रेडियो है और आपने गणतंत्र दिवस परेड का हाल सुनने के लिए उसे चालू कर दिया है। आप राजपथ, नई दिल्ली पर इस दिन हो रही गतिविधियों को वहीं से जान सकते हैं। रेडियो कमेंटेटर (जैसे महाभारत के संजय) परेड का आँखों देखा हाल सुनाएगा। इसे सुनने के साथ ही आपके मन में परेड की तस्वीरें अपने–आप बनने लगेंगी। यह रेडियो है जो आपको सब बताता है। आप जहाँ भी मौजूद हैं, पास के रेडियो स्टेशन के कार्यक्रम सुन सकते हैं। आप इस पर संगीत, समाचार तथा अन्य कार्यक्रमों का आनन्द उठा सकते हैं। अब सक्रिय वाणिज्यिक रेडियो स्टेशन आपको संगीत तथा चैटिंग चौबीसों घंटे उपलब्ध करा रहे हैं। यदि आप आकाशवाणी सुन रहे हैं तो हर घंटे समाचार तथा अन्य कार्यक्रम आपको सुनने को मिलेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप निम्नांकित बातों से परिचित हो सकेंगे:–

- रेडियो प्रसारण प्रक्रिया की व्याख्या;
- रेडियो प्रसारण की विशेषताएँ;
- रेडियो प्रसारण के विविध कार्य–दायित्वों की पहचान;
- रेडियो प्रसारण की सीमाएँ।

9.1 रेडियो प्रसारण की शब्दावली

- **जनता** :- लोगों का समूह जो किसी रेडियो या मीडिया कार्यक्रम का दर्शक/श्रोता या पाठक होता है।
- **श्रोता**:- एक व्यक्ति अथवा समूह जो किसी रेडियो कार्यक्रम का लक्षित व्यक्ति या समूह होता है।
- **प्रसारण** :- इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से जनता को संदेश/तथ्य प्रेषित करने की प्रक्रिया।
- **रेडियो ट्यून करना** :- श्रोता द्वारा रेडियो चालू कर किसी रेडियो स्टेशन से कार्यक्रम सुनने के लिए फ्रिक्वेंसी सही करना।
- **सीधा प्रसारण**:- इसका आशय होता है कि किसी कार्यक्रम का, जब वह हो रहा है सीधे वहीं से प्रसारण। पूर्व रिकॉर्डेड या संपादित अंश इसमें सम्मिलित नहीं होते।
- **पूर्व-ध्वन्यांकित (रिकार्डेड) कार्यक्रम** :- बाद में प्रसारण के लिए कार्यक्रम को मैग्नेटिक टेप, फोनोग्राफिक डिस्क या कॉम्पैक्ट डिस्क पर ध्वन्यांकन या रिकॉर्ड किया जाना।
- **स्क्रिप्ट** :- किसी रेडियो कार्यक्रम में बोले जाने वाले अंश का लिखित/मुद्रित रूप।

9.2 रेडियो के उद्देश्य

आपने पहले मॉड्यूल में जनसंप्रेषण माध्यमों की भूमिका के बारे में पढ़ा होगा। उक्त में विविध माध्यमों जैसे प्रिंट मीडिया (समाचारपत्र, पत्रिकाएँ आदि) तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (रेडियो, टीवी आदि) के बारे में बताया गया था। इनके कार्य समरूपता लिए होते हैं।

आपने किसी लोकप्रिय साबुन या शैम्पू का विज्ञापन तो अवश्य सुना होगा। यह क्या संदेश देता है? इसकी सहायता से साबुन या शैम्पू का 'ब्रांडनेम' आपको पता चलता है। आपको बताया जाता है कि यह उत्पाद बाजार में उपलब्ध है। यह विज्ञापन आपको यह भी बताता है कि उक्त उत्पाद में क्या विशेषताएं हैं।

आइए हम एक और उदाहरण से स्पष्ट करें। जल आपूर्ति विभाग रेडियो के माध्यम से एक घोषणा करता है कि कल सुबह आपके गाँव या इलाके में पानी की आपूर्ति बाधित रहेगी। आप इस स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

इसी तरह रेडियो के जरिये आपको पता चलता है कि आने वाला रविवार पोलियो रविवार है। अगर आपके घर में पाँच साल तक का कोई बच्चा है तो यह सूचना पाकर आप निर्णय लेंगे कि रविवार को उसे पोलियो खुराक पिलानी है।

आपने रेडियो पर कृषि आधारित ग्रामीण कार्यक्रम भी सुने होंगे। कार्यक्रम में विशेषज्ञ किसी मौसम में किसी फसल विशेष के उत्पादन में बरती जाने वाली सावधानियाँ भी बताते हैं। इस जानकारी का उपयोग कर आप खेती को बेहतर तरीके से कर सकते हैं।

अब ऊपर दिए गए तीनों उदाहरणों पर विचार करें। पहले उदाहरण में आप किसी साबुन या शैम्पू के ब्रांड विशेष की जानकारी पाते हैं। यह केवल सूचना है। यह आपको निर्धारित करना है कि सूचना का उपयोग आप किस तरह करेंगे।

जलापूर्ति तथा पोलियो दवा सम्बन्धी दूसरी तथा तीसरी घोषणाओं में भी आपके लिए सूचना है। आप इन सूचनाओं की उपयोगिता से सहमत हो सकते हैं।

चौथा उदाहरण कृषि को सही तरीके से संपादित करने से जुड़ा है। यह सूचना किसी किसान को शिक्षित कर सकती है। उसके पास खेती का कोई औपचारिक प्रशिक्षण या शिक्षा नहीं है लेकिन इस जानकारी से वह बेहतर तरीके से खेती कर सकता है।

'ज्ञानवाणी' का उदाहरण भी सामने है। यह आकाशवाणी का एक रेडियो चैनल है जिससे विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है।

इन उदाहरणों से आपने रेडियो के कार्य या भूमिका के बारे में क्या जाना?

प्रथम, रेडियो हमें सूचित करता है।

चित्र 9.1: ग्रामीण परिवेश में रेडियो सुनते श्रोता

द्वितीय, रेडियो शिक्षित करता है

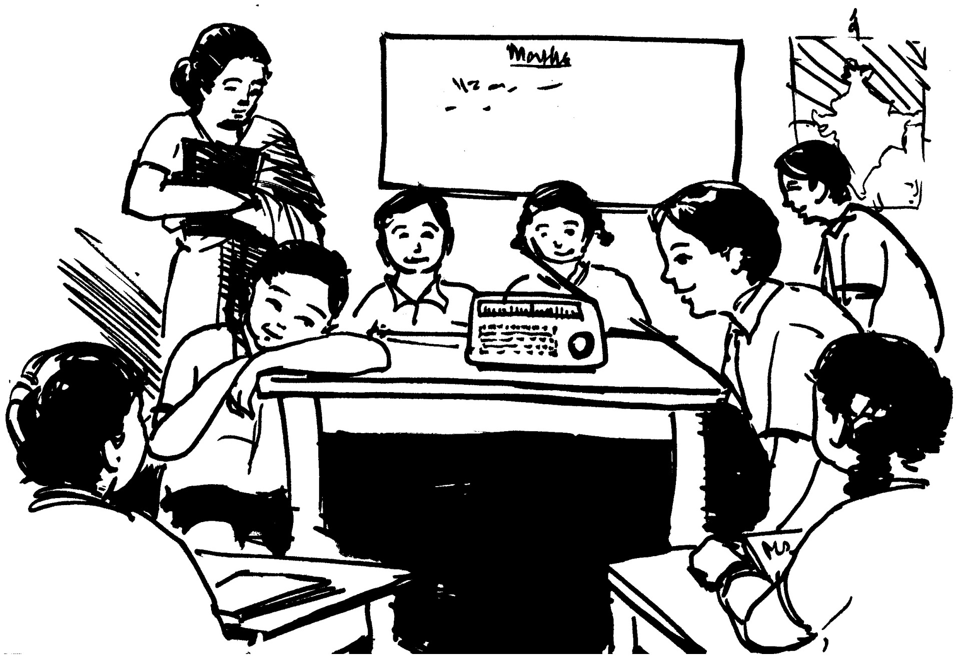

चित्र 9.2: रेडियो पर शैक्षिक कार्यक्रम सुनते विद्यार्थी

रेडियो केन्द्र हमें फिल्म संगीत सुनाते हैं। क्या आप मनोरंजन के लिए रेडियो पर फिल्मों के गाने नहीं सुनते? यही नहीं हल्की–फुल्की टिप्पणियाँ तथा उद्घोषणाएँ भी हमारा मनोरंजन करती हैं।

अतः रेडियो हमारा मनोरंजन भी करता है

चित्र 9.3: गाड़ी चलाते समय संगीत का आनन्द उठाना

टिप्पणी

लोग मुख्य रूप से—सूचना, शिक्षा तथा मनोरंजन के लिए रेडियो सुनते हैं। रेडियो खर्चीला माध्यम नहीं है। यह हमारे देश की बहुत बड़ी आबादी के लिए सूचना, शिक्षा तथा मनोरंजन का सुलभ साधन है। ऐसे लोग जो पढ़ना–लिखना नहीं जानते तथा देख नहीं सकते रेडियो समाचार के माध्यम से दिन–प्रतिदिन हमारे आसपास हो रही घटनाओं से परिचित रहते हैं।

वैसे रेडियो के ये तीन उद्देश्य एक–दूसरे के पूरक हैं।

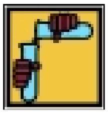

क्रियाकलाप 9.1 *: अपना पसंदीदा रेडियो केन्द्र लगाइए। दो या तीन दिनों तक उसके कार्यक्रमों को सुनिए। उनको सूचीबद्ध करके उनका वर्गीकरण कीजिए कि वे सूचनात्मक हैं, शैक्षणिक हैं अथवा मनोरंजक हैं। उन मापक्रमों को भी चिन्हित कीजिए जिसमें एक से ज्यादा उद्देश्य स्पष्ट हो रहे हैं।*

पाठगत प्रश्न 9.1

1. यहाँ कुछ परिभाषाएँ प्रस्तुत हैं। उनमें सामने इन्हें एक शब्द में स्पष्ट कीजिए जो रेडियो में प्रयुक्त होता है।

   (i) एक व्यक्ति या समूह जो किसी रेडियो कार्यक्रम का लक्षित व्यक्ति या समूह होता है। ______________

   (ii) वह व्यक्ति जो जनता के लिए रेडियो पर कार्यक्रमों की उद्घोषणा करता है। ______________

   (iii) इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से जनता को संदेश/तथ्य प्रेषित करने की प्रक्रिया। ______________

   (iv) बाद में प्रसारण के लिए मैग्नेटिक टेप, फोनोग्राफिक डिस्क अथवा कॉम्पैक्ट डिस्क पर कार्यक्रम का ध्वन्यांकन (रिकॉर्डिंग)। ______________

   (v) रेडियो कार्यक्रमों में बोले जाने वाले शब्द/संदेश की लिखित प्रति। ______________

2. आपने सीखा की श्रोताओं को सूचित करना रेडियो के उद्देश्यों में से एक है। अन्य दो उद्देश्यों का उल्लेख करें तथा अपने द्वारा सुने गये रेडियो कार्यक्रमों का उदाहरण देकर इसे स्पष्ट करें।

9.3 रेडियो की विशेषताएँ

(i) रेडियो घटनाओं का सटीक शाब्दिक चित्रण करता है:- दिल्ली के गणतंत्र दिवस परेड का उदाहरण तो आपको याद ही होगा? आपने जब आँखों देखा हाल सुना होगा आपके मन में अपने आप पूरा का पूरा दृश्य उभर आया होगा। जब आपके कानों में देशभक्ति धुन बजाते बैण्ड या मार्च करने तथा कमाण्ड के शब्द पड़े होंगे तो आपके मन में उनकी तस्वीर भी बन गयी होगी। जब आँखों देखा हाल सुनते हैं तो शब्दों का अनुसरण करते हुए आपकी कल्पनाशीलता सक्रिय हो जाती है और वर्णन के चित्र बनने लगते हैं।

(ii) रेडियो की गति:- रेडियो सबसे तेज माध्यम है। यह तात्कालिक माध्यम है। घटनाओं के स्टूडियो या बाहर घटित होने के साथ ही उनका विवरण रेडियो पर दिया जा सकता है। इन संदेशों को हर वह व्यक्ति प्राप्त कर सकता है जिसके पास रेडियो है तथा उसने सुनने के लिए स्टेशन लगाया हुआ है। यदि आपके पास टीवी है तथा केबल/सेटेलाइट सुविधा है तो आप अपना पसंदीदा चैनल देखने के लिए रिमोट का बटन दबाते हैं। आजकल आकाशवाणी के विविध चैनल भी सेटेलाइट के माध्यम से उपलब्ध हैं। ऐसा नहीं है तो आपके सामान्य रेडियो सेट पर लगे फ्रिक्वेंसी मीटर पर आपको विविध रेडियो चैनल उपलब्ध हो सकते हैं। आप अपने रेडियो पर कुछ ही मिनट पहले घटी घटना का समाचार सुन सकते हैं। दूसरी ओर समाचारपत्र आपको एक दिन पूर्व की घटनाओं की जानकारी देता है। यह भी सच है कि टेलीविजन भी आपको तत्काल समाचार उपलब्ध करा सकता है। लेकिन इसकी कवरेज के लिए प्रकाश और कैमरे की आवश्यकता पड़ती है।

(iii) सरल माध्यम :- अन्य माध्यमों की तुलना में रेडियो का उपयोग करना आसान है। जैसा कि पूर्व के खंडों में बताया गया है रेडियो सरल प्रौद्योगिकी तथा उपकरणों की माँग करता है।

(iv) रेडियो सस्ता माध्यम है:- सरल होने के साथ–साथ रेडियो सस्ता माध्यम भी है। रेडियो कार्यक्रम निर्माण की लागत कम है तथा एक काम करने लायक रेडियो मात्र पचास रुपये में आप खरीद सकते हैं।

(iv) रेडियो को बिजली की जरूरत नहीं है:- आपके पास बिजली के जनरेटर की सुविधा नहीं है फिर भी आप बैटरी सेल (ड्राई) की सहायता से रेडियो सुन सकते हैं। हमारे देश में जहाँ हर जगह बिजली नहीं पहुँच सकी है, रेडियो एक वरदान की तरह है।

(v) रेडियो रिसीवर पोर्टेबल होता है:- क्या आप अपना रेडियो सेट घर में बैठक से

उठाकर किचेन में या जहाँ आप जाते हैं नहीं ले जाते हैं? आप ऐसा कर सकते हैं। लेकिन टेलीविजन के साथ आप आसानी से ऐसा नहीं कर सकते। किसी वस्तु को आसानी से एक जगह से दूसरी जगह ले जाने की सुलभता को 'पोर्टाबिलिटी' कहते हैं जो रेडियो की विशिष्टता है। आजकल तो आपके पास अगर कार है तो उसमें रेडियो लगाकर गाड़ी चलाते समय भी आराम से इसे सुन सकते हैं। क्या आप गाड़ी चलाते समय टेलीविजन देख सकते हैं?

(vi) रेडियो सुनने के लिए अक्षर ज्ञान आवश्यक नहीं:- अगर आप पढ़े–लिखे नहीं हैं तो न ही आप अखबार पढ़ सकते हैं और न ही आप टेलीविजन पर प्रदर्शित शीर्षक या वाक्य पढ़ सकते हैं। लेकिन रेडियो सुनने के लिए पढ़ा–लिखा होना जरूरी नहीं है। आप रेडियो पर कार्यक्रम तथा समाचार किसी भी भाषा में प्राप्त कर सकते हैं।

(vii) गाँव में रहने वाले अधिकांश भारतवासियों के लिए रेडियो समाचार तथा मनोरंजन का इकलौता माध्यम है। रेडियो पर समाचार एक सस्ते रिसीवर की सहायता से कहीं भी सुने जा सकते हैं। समाज का आर्थिक रूप से सबसे पिछड़ा तबका भी रेडियो का खर्च वहन कर सकता है।

- रेडियो मनोरंजन का सबसे अच्छा माध्यम है। यह श्रोताओं को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करता है।
- इस पर संगीत का वैविध्यपूर्ण खजाना श्रोताओं के लिए उपलब्ध है।
- शास्त्रीय, उपशास्त्रीय भक्ति, लोक तथा फिल्म संगीत रेडियो पर उपलब्ध संगीत के लोकप्रिय प्रकार हैं।

पाठगत प्रश्न 9.2

1. रेडियो की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख करें।
2. निम्न कथनों में से सत्य तथा असत्य की पहचान (√) लगाकर करें:–

   (i) रेडियो घटनाओं का सटीक शाब्दिक चित्रण करता है। (सत्य/असत्य)

   (ii) रेडियो धीमा माध्यम है। (सत्य/असत्य)

   (iii) रेडियो एक खर्चीला माध्यम है। (सत्य/असत्य)

   (iv) रेडियो सुनने के लिए व्यक्ति का साक्षर होना आवश्यक है। (सत्य/असत्य)

   (v) रेडियो पोर्टेबल माध्यम नहीं है। (सत्य/असत्य)

9.4 रेडियो प्रसारण की सीमाएँ

अभी तक हमने जन माध्यम के रूप में रेडियो की शक्ति के बारे में जाना। आइए अब इसकी सीमाओं के बारे में भी जान लें।

(क) **दुहराव की सुविधा नही होती:-** यदि आप समाचारपत्र के पाठक हैं, तो आप इसे सुरक्षित रख सकते हैं और दोबारा पढ़ सकते हैं। आपके पास मुद्रित सामग्री है तथा जबतक समाचारपत्र नष्ट नहीं होगा यह आपके पास ही रहेगा। जब आप समाचार पढ़ते हैं तो हो सकता है कि कुछ शब्द आपको समझ में नहीं आए। ऐसे में आप शब्दकोष की सहायता ले सकते हैं अथवा किसी जानकार व्यक्ति से पूछ सकते हैं।

अब रेडियो को देखिए। मान लीजिए आप अंग्रेजी में समाचार सुन रहे हैं तथा कुछ शब्द जो आपने सुने, आपको समझ में नहीं आए। क्या आप शब्दकोष की सहायता ले पाएँगे या किसी से पूछ पाएँगे? यदि आप ऐसा करने के लिए रुकते हैं तो बाकी समाचार निकल जाएगा। जो भी आप सुन रहे हैं उसे आपको तत्क्षण सुनना है। आपके पास सुनने का एक ही मौका होता है। अगर आप रिकॉर्ड नहीं करते तो रेडियो पर प्रसारित शब्द ज्यादा देर तक नहीं मौजूद रहते। शब्दों की उम्र क्षणिक होती है। समाचारपत्र या पुस्तकों के मुद्रित संदेशों के विपरीत उच्चारित शब्द स्थायी नहीं होते। यह रेडियो की बहुत बड़ी सीमा या कमजोरी है। इसका यह तात्कालिक चरित्र रेडियो को ऐसा माध्यम बनाता है जिस पर दुहराव की सुविधा नहीं होती। श्रोता के पास सुनने और समझने का बस एक मौका होता है।

(ख) **रेडियो पर चित्र नहीं दिखाए जा सकते :-** आइए अब हम एक समाचार का विवेचन करें जो रेडियो तथा टीवी दोनों पर प्रसारित है। समाचार विध्वंसक चक्रवात नरगिस के विषय में है जिसने मई, 2008 में म्यानमार में तबाही मचाई। रेडियो समाचार से हमें चक्रवात की भीषणता, हताहतों की संख्या, संपत्ति को हुए नुकसान आदि का विवरण मिल गया। टेलीविजन समाचार के संदर्भ में चक्रवात वास्तव में किस तरह से आ रहा है, जान–माल को हुआ नुकसान, राहत तथा बचाव कार्य तथा अन्य सम्बन्धित चित्र देखे जा सके। अब इन दोनों की तुलना करें। चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदा रेडियो पर सुनने के बजाय जब टीवी पर दिखती है तो समाचार ज्यादा प्रभावी होता है। कहा भी गया है कि एक तस्वीर हजार शब्दों की ताकत रखती है। यह भी कहा जाता है कि देखी हुई बात पर ज्यादा विश्वास होता है। अतः आप जो देखते हैं उस पर सुनने से ज्यादा विश्वास करते हैं। अतः चित्र दिखाने की असमर्थता रेडियो की बहुत बड़ी कमी है।

(ग) **रेडियो पर प्रसारित संदेश जल्द विस्मृत हो जाते हैं:-** चित्र नहीं दिखा पाने की रेडियो की कमी एक और सीमितता उजागर करती है। जो हम देखते हैं वह अक्सर याद रहता है तथा कुछ तो बहुत समय बाद तक याद रहते हैं। उदाहरण के तौर पर यदि आपने ताजमहल के सुन्दर चित्र देखे हैं, तो यह आपकी यादों में बना रहेगा। लेकिन आप जो केवल सुनते हैं उसे जल्द ही भूल जाते हैं। ऐसा हो सकता है कि आपने अपनी कक्षा में कुछ रोचक सुना है, तो आपको वह याद रहे। लेकिन आप सुने हुए रेडियो समाचार के सभी मुख्य अंश या हेडलाइन्स दोहरा सकते हैं? सामान्यतः आप ऐसा नहीं कर पाते। अतः यह रेडियो की एक और सीमितता है। रेडियो पर सुने संदेश जल्द विस्मृत हो जाते हैं या भूल जाते हैं।

(घ) **उद्घोषकों/प्रस्तोता का कमजोर प्रस्तुतीकरण :-** अगर रेडियो कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले प्रस्तोता या उसमें भाग लेने वाले लोगों की प्रस्तुति बोर करने वाली या अनाकर्षक हुई तो श्रोता रेडियो सेट बंद कर सकता है। श्रोता की रुचि इस बात पर निर्भर करती है कि सूचना या संदेश कैसे प्रस्तुत किया जा रहा है।

(च) रेडियो प्रसारण उन लोगों के लिए किसी मतलब का नहीं है जिनमें श्रवण संवेदना नहीं है और जो सुनने में अक्षम हैं।

पाठगत प्रश्न 9.3

1. रेडियो की किन्हीं तीन सीमितताओं का उल्लेख करें।
2. निम्नांकित कथनों में से सत्य/असत्य की पहचान करें।

   (i) रेडियो सचित्र प्रसारण उपलब्ध कराता है (सत्य/असत्य)

   (ii) यदि कमेंटेटर उबाऊ होगा तो उसका प्रसारण भी उबाऊ होगा। (सत्य/असत्य)

   (iii) रेडियो संदेश आसानी से भूल जाते हैं। (सत्य/असत्य)

   (iv) रेडियो उनके लिए उपयोगी नहीं है जो देख नहीं सकते। (सत्य/असत्य)

   (v) श्रोता के पास रेडियो पर सुनने और समझने का केवल एक मौका होता है। (सत्य/असत्य)

9.5 आपने क्या सीखा

रेडियो की विशेषताएँ

→ रेडियो प्रसारण के सिद्धान्त

- रेडियो प्रसारण में प्रायः प्रचलित शब्द
- श्रोता, प्रसारक, प्रसारण, पूर्व–ध्वन्यांकित (रिकॉर्डेड) कार्यक्रम, स्क्रिप्ट, रेडियो ट्यून करना।

→ रेडियो के उद्देश्य

- सूचित करना
- शिक्षित करना
- मनोरंजन करना

(परस्पर निर्भर)

→ रेडियो की विशेषताएँ

- रेडियो शब्दों से चित्र उपस्थित करता है
- तेज माध्यम
- सरल माध्यम
- सस्ता माध्यम
- पोर्टेबल माध्यम

→ रेडियो की सीमाएँ

- दोहराव सामान्यतः संभव नहीं
- चित्र दिखाने की सुविधा नहीं
- रेडियो पर प्राप्त संदेश जल्दी भूल जाते हैं
- श्रवण अक्षमता वाले लोगों के लिए अनुपयोगी

टिप्पणी

9.6 पाठान्त प्रश्न

1. रेडिया प्रसारण से सम्बन्धित प्रचलित शब्दों की सूची बनाइए तथा प्रत्येक की व्याख्या कीजिए।
2. रेडियो के उद्देश्यों का सोदाहरण वर्णन करें।
3. 'जन माध्यम' के रूप में रेडियो की कार्यगत विशेषताओं का वर्णन करें।
4. रेडियो की सीमाओं की विस्तार से चर्चा करें।

9.7 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1 1. (i) श्रोता

(ii) प्रसारक

(iii) प्रसारण

(iv) पूर्व–ध्वन्यांकित (प्री–रिकॉर्डेड) कार्यक्रम

(v) स्क्रिप्ट

2. मनोरंजन करना, शिक्षित करना। उदाहरण हर विद्यार्थी के अलग–अलग होंगे।

9.2 1. खंड 9.3 से संदर्भ लें।

2. (i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) असत्य

(iv) असत्य

(v) असत्य

9.3 1. खंड 9.4 का संदर्भ लें

2. (i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) असत्य (v) सत्य